सम्पादक की कलम से.....

रामअवतार बैरवा

बहुजन हिताय बहुजन सुखाय

आकाशवाणी जैसा पवित्र और प्राकृतिक शब्द शायद ही अन्यत्र कहीं हो । आवेगों को संजोने, सजाने, और पूरी चेतना के साथ जन समूह तक इस तरह प्रवाहित करना कि हर शब्द सच्चा लगे, हर शब्द ब्रह्म लगे , सिर्फ आकाशवाणी पर ही संभव है । "शब्द ब्रह्म है" की उत्पत्ति भी शायद इसी से हुई होगी । ईश्वर और व्यक्ति को एक शब्द में बांधने की महीन श्रृंखला, जो दिखती नहीं पर सुनाई देती है । जब कोई ऐसा कार्य होने जा रहा होता है, जो महापुरुषों की बुद्धि क्षमता से भी परे हो, जब सोचने की क्षमता पर पहरा लग जाता है, तब की शब्द शक्ति को आकाशवाणी कहा जाता है। जब भरत , प्रभु श्री राम, सीता और लक्ष्मण को वन से वापस ले जाने के लिए अवध की पूरी सेना के साथ आते हुए लक्ष्मण को दिखाई पड़ते हैं और लक्ष्मण, श्री राम से कहते हैं - "भैया! शस्त्र उठा लीजिए, भरत पूरी सेना के साथ अब हमें समूल नष्ट करने के लिए आ रहे हैं ।" राम के लिए सबकुछ समझ पाना प्रज्ञा से बाहर हो जाता है, तब आकाशवाणी होती है -"सावधान! तुम जो समझ रहे हो, वैसा कुछ भी नहीं है!" यानी वो वाणी, जिसके बाद सारे सत्य खत्म हो जाते हैं , सारी धारणाएं शांत हो जाती हैं । एक ऐसी वाणी, जिसमें सप्त ऋषि, सारे गृह नक्षत्र, चांद, तारों सहित पूरा ब्रह्माण्ड सम्मिलित होता है, जिसमें चारों वाणी (ओमकार्, अकार्, उकार और मकार्) और वाणी के चारों स्वरूप (परा, पश्यंति, मध्यमा और बेखरी) अपनी अलौकिक भूमिकाओं में उपस्थित रहते हैं। उसमें झूठ की तनिक परझांई भी नहीं होती, ऐसी वाणी को भारतीय संस्कृति में आकाशवाणी कहा जाता है। आधुनिक भारत में एक यंत्र (रेडियो) के माध्यम से प्रवाहित और प्रसारित वाणी को आकाशवाणी की संज्ञा दी गई है।

23 जुलाई 1927 को जब भारत में रेडियो प्रसारण की विधिवत शूरुआत हुई , तब इसका नाम आकाशवाणी नहीं था। आजादी के बाद ही भारतीय मनीषियों ने रेडियो यंत्र से प्रसारित कार्यक्रमों को आकाश से हुई वाणी अर्थात आकाशवाणी नाम दिया गया। पूरी दुनिया में आज भी रेडियो के लिए इतना उचित, सटीक और बेहतर शब्द नहीं है। भारत में आज भी आकाशवाणी के कार्यक्रमों को पूरी तरह सत्य माना जाता है।आज भी समय की सत्यता के लिए भारतवासी कहते हैं कि मेरी घड़ी आकाशवाणी से मिली हुई है। सारे मुहूर्त, सारे संस्कार, सारी दिनचर्या आकाशवाणी की घड़ी से ही तय होती हैं।

ISSN:2583-8849

यही नहीं शब्दों का सही प्रयोग और भाषा का उचित प्रवाह और उच्चारण आकाशवाणी ही सिखाती है। इसीलिए आकाशवाणी को ब्रम्हवाणी माना जाता है। आज की वाणी भले एक यंत्र के माध्यम से जन तक पहुंचती है पर उस युग से इस युग तक इसकी साधना में , इसके संस्कारों में, इसके मूल्यों में और

विश्वास में जरा भी फर्क नहीं मिलता। आज भी शिक्षा, साक्षरता, किसानों, युवाओं , महिलाओं, आदिवासी, पिछड़े वर्गों,कटते वृक्षों और जल संकट पर निसदिन चिंता सिर्फ आकाशवाणी पर ही व्यक्त की जाती है। आज भी आकाशवाणी के कार्यक्रम निर्माता और प्रस्तुतकर्ता एक - एक कार्यक्रम को तीन - तीन बार सिर्फ इसलिए सुनते हैं कि कोई असत्य या अनर्गल बात प्रसारित ना हो जाए। आज भी ज़रा-सी देर तक कार्यक्रम प्रसारित न होने पर तुरंत खेद प्रकट करने की सात्विक परम्परा सिर्फ आकाशवाणी पर कायम है। परोपकार, यम, नियम, संयम, ध्यान और धारणा जैसे शब्द इसकी पूंजी हैं । बड़े कलाकार, बड़े गायक, बड़े कवि और बड़े समाजसेवियों की जीवनी पलटकर देखी जाए तो आकाशवाणी उनकी पहली पाठशाला के रूप में अंकित है । इतने माध्यमों के बीच प्रधानमंत्री जी ने रेडियो को "मन की बात" के लिए यूं ही नहीं चुना।

आकाशवाणी आज भी अपने कार्यक्रमों की शुरुआत अराधना और साधना से करती है। आकाशवाणी पर कभी भी सुबह के कार्यक्रमों में विवाद नहीं सुनाई पड़ता । आज भी यहां कभी शाम की राग सुबह और सुबह की राग शाम को नहीं सुनाई पड़ती ; कहीं पशु - पक्षी विचलित न हो जाएं, कहीं प्रकृति अपना विश्वास न खो दे